'अनु' उपसर्ग एवं 'वाद' संज्ञा के संयोग से अनुवाद शब्द बना है। अनुवादक को मूल रचनाकार के पीछे आना अथवा जाना है। वास्तव में अनुवाद एक भाषा में व्यक्त विचारों को किसी दूसरी भाषा में परिमार्जित रूप देकर अभिव्यक्त करना अनुवाद है।

विश्व की अनेक भाषाओं में कई विषयों पर आधारित अनेक प्रकार का साहित्य उपलब्ध होता है। आज के युग में सभी पाठकों को वह साहित्य पढ़ना असम्भव है ऐसी स्थिति में पाठक का अपने आप अनुवादित साहित्य की ओर खींच जाना स्वाभाविक हो जाता है। वर्तमान समय में अनुवादित साहित्य का महत्व इसी कारण बढ़ा है।

अलग-अलग भाषाओं के साहित्य का अनुवाद किसी दूसरी भाषा में करने की प्रक्रिया बहुत प्राचीन समय से शुरू है अर्थात अनुवाद का इतिहास बहुत पुराना है। विश्व के कई भाषाओं तथा साहित्यों का समय-समय पर अनुवाद होता गया है। अनुवाद कार्य से ज्ञान की धारा एक तरफ से दूसरी तरफ प्रवाहित होता रहता है। अन्य भाषा में प्राप्त तकनीकि और वैज्ञानिक ज्ञान हम अनुवादित साहित्य के द्वारा हासिल कर सकते हैं। अनुवाद ग्रन्थों का अध्ययन कर हम मानव-मानव में बन्धुत्व, साहचर्य और प्रेमभाव को बढ़ा सकते हैं। अनुवाद के द्वारा अन्य देश, प्रान्तों में वर्णित संस्कृति, साहित्य, राजनीति आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। अनुवाद समय के अनुसार आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम है। अनुवाद कार्य से किसी के कमी को जल्द भरा जा सकता है। इससे ज्ञान का वितरण एक समूह से दूसरे समूह में हस्तान्तरित होता है इससे सभी मानव में समता का भाव लाया जा सकता है। अनुवाद से भाषा का आधुनिकीकरण होता है। यह समायोजन सेतु है

② [illegible]

संताली भारत की प्रमुख जनजातियों में से एक है। यह भारत में ही नहीं अपितु नेपाल, भूटान, बंगलादेश, चीन, म्यानमार आदि कई देशों में कमोवेश है। सांस्कृतिक दृष्टि से भारत में संताल को जनजातियों में प्रथम स्थान प्राप्त है। संताली भाषा को आस्ट्रिक परिवार के अन्तर्गत रखा गया है। संताली भाषा प्राचीन भाषाओं में से एक है क्योंकि भारत में संताल का आगमन आर्यों के पहले हुआ है। इसकी भाषा-संस्कृति को लम्बी समय तक मौखिक धारा में ही सुरक्षित रखा गया था। अंग्रेज आगमन के बाद 1845 ई० के लगभग से इसकी मौखिक धारा को लिखित रूप दिया गया है। लिखित रूप के पहले संताली भाषा-संस्कृति को 'होड़ रोड़' 'होड़ लेगचार' के नाम से जाना जाता था तथा अपने आप को भी 'होड़' यानी मनुष्य मात्र कहा करते थे। इसलिए उनके मौखिक साहित्य भी अब तक 'होड़ सॉवहेद़', 'होड़-काहनी', 'होड़-सेरेञ', 'होड़ ~~[illegible]~~ बिनती-बाखेड़' आदि के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार संताल 'बिनती-बाखेड़' सदियों पुराना है।

संताली लिखित साहित्य के प्रादुर्भाव के साथ इनके सामने लिपि समस्या आयी। शुरु से लेकर अब तक संताली भाषा साहित्य को रोमन, बंगला, देवनागरी, उड़िया, लिपि से लिखे जाने लगा। विगत शताब्दी से संताली भाषा-साहित्य को ओल चिकि लिपि से लिखे जाने लगा है। वर्तमान में संताली भाषा-साहित्य के लिए ओल-चिकि लिपि ही सर्वश्रेष्ठ स्थान पर विराजमान है। आधुनिक समय में ओलचिकि लिपि विश्व के श्रेष्ठतम लिपि के रूप में आविर्भाव हो चुका है। ओलचिकि ध्वन्यात्मक लिपि है।

संताली में अब तक मूल रूप से एक हजार के लगभग पुस्तकों का सृजन हो चुका है। अंग्रेजों ने संताली से संबंधित कई आधार ग्रन्थ अंग्रेजी में प्रकाशित किये हैं। कुछ का तो अंग्रेजी-संताली भी प्रकाशित हुआ है कुछ का संताली-हिन्दी रूपान्तरण हुआ है। यह अनुवादित या रूपान्तरण कार्य नगण्य के बराबर है। इसपर अनुवाद कार्य करने की बहुत अधिक गुंजाइश है। संताली भाषा साहित्य के लिए त्रिभाषासूत्र अधिक उपयुक्त है। संताली-हिन्दी, संताली-अंग्रेजी तथा हिन्दी-संताली, अंग्रेजी-संताली में अनुवाद या रूपान्तरण का कार्य बहुत अधिक अपेक्षित है। संताली के लोकगीत, लोककथा व लोकोक्तियाँ व कहावत का विशाल भण्डार है जिसे हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में अनुवाद कार्य किया जा सकता है। उसी प्रकार संताल के अब तक के प्रमुख कृतियों को भी हिन्दी-अंग्रेजी में अनुदित किया जा सकता है। इसी प्रकार हिन्दी-अंग्रेजी के श्रेष्ठतम व शिक्षाप्रद, ज्ञानदायी कृति का भी संताली में अनुवाद कार्य किया जा सकता है।

पद्मश्री भागवत मुर्मु ठाकुर द्वारा कुछ संताली विवाह लोकगीतों का संताली-हिन्दी अनुवाद कार्य हुआ है। पी०ओ० बोडिंग द्वारा संताली लोक कहानी का संताली-अंग्रेजी में अनुवाद कार्य हो चुका है। उसी प्रकार बोडिंग द्वारा ही 'Traditional and institutional of Santal' का संताली भाषा-रोमन लिपि में 'होड़ कोरेन मारे हापड़ाम को रेयाक् काथा' उपलब्ध है। भाषा-सांस्कृतिक दृष्टि से इसे हिन्दी में अनुवाद करना महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें भाषा-संस्कृति विस्तृत रूप में अंकित है।

मैं लिखी गई है जिसे हिन्दी एवं अंग्रेजी में अनुवाद कार्य किया जा सकता है। खेरवाल बंशो धोरोम पुथी का बंगला-भाषा- लिपि में रूपान्तरण हो चुका है। इस पुस्तक में भी संताली के भाषा-संस्कृति भरपूर भरा हुआ है। इसी प्रकार, पंडित रघुनाथ मुर्मू द्वारा रचित 'हितल', खेरवाड़ बीर, दाड़ेगे धन, बिदु चाँदान, होड़ सेरेञ आदि का हिन्दी व अंग्रेजी में अनुवाद कार्य किया जा सकता है। साधु रामचाँद मुर्मू द्वारा रचित 'ईश रोड़' का भी हिन्दी-संताली में अनुवाद कार्य किया जा सकता है। मेरे द्वारा लिखित 'संताली लोकगीतों में साहित्य और संस्कृति' को भी अंग्रेजी एवं हिन्दी में अनुवाद कार्य किया जा सकता है क्योंकि इस पुस्तक में कुछ चुने हुए लोकगीतों को ही स्थान दिया गया है। पी० ओ० बोडिंग द्वारा लिखित 'मेटेरियल फॉर दा संताली ग्रामर' को भी संताली व हिन्दी में अनुवाद किया जा सकता है ऐसे ही कई साहित्यिक विधाओं का हिन्दी, अंग्रेजी से संताली में अनुवाद किया जा सकता है। बोडिंग के 'संताल मेडिसिन' को भी संताली, हिन्दी में अनुवाद कार्य किया जा सकता है।

संताली में अभी तकनीकि, विज्ञान, गणित, शब्दावली आदि कई महत्वपूर्ण कड़ियों को अंग्रेजी, हिन्दी से संताली में अनुवाद कार्य किया जा सकता है।

संताली अपने आप में भाषा-सांस्कृतिक दृष्टि से कई अनुठा स्थान लिये हुए हैं जिसे अनुदित कार्य पूरा कर विश्व के अन्य लोगों को भी जानकारी दिया जा सकता है। विश्व के अमेरिका, कानाडा, इंगलैंड, नॉर्वे, फ्रांस, जर्मन, रूस, जापान, चीन आदि कई देश संताली भाषा-संस्कृति पर रूची लिये हुए हैं।

20-03-2020

Professor